संधि Contd.

वा०(2) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु - प्र उपसर्ग पूर्वक यदि ऊह, ऊढ, ऊढि, एषः एष्य हो तो उसके पूर्व और के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। यथा - प्र + ऊहः = प्रौहः (प्रकृष्ट तर्क) प्र + ऊढः = प्रौढः। प्र + ऊढि = प्रौढिः, प्र + एषः = प्रैषः (प्रेरणा), प्र + एष्यः = प्रैष्यः (प्रेरणीय व्यक्ति)।

ऋते च तृतीयासमासे -

वा०(3) ऋते इति - यदि अवर्ण के परे 'ऋत' शब्द हो और वह तृतीया तत्पुरुष समास का हो तो पूर्व और पर वर्ण के स्थान में वृद्धि एकादेश हो जाता है। यथा - सुखार्तः - सुखेन ऋतः; परमार्तः - परमश्चासौ ऋतः।

वा०(4) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे - प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण और दशन इन छः शब्दों के परे यदि ऋण शब्द हो तो पूर्व और पर वर्ण के स्थान पर वृद्धि एकादेश हो जाता है। यथा - प्र + ऋणम् - प्रार्णम् (अधिक ऋण) - (बछड़े के लिए लिया गया ऋण)

वत्सतर + ऋणम् - वत्सरार्णम् (कम्बल का ऋण)

कम्बलार्णम् - कम्बल + ऋणम् (वस्त्र के लिए ऋण)

वसनार्णम् - वसन + ऋणम् (ऋण देने के लिए लिया गया

ऋणार्णम् - ऋण + ऋणम् (देश-विशेष का नाम)

ऋण), दशार्णम् - दश + ऋणम्

35. उपसर्गाः क्रियायोगे - 1|4|59. यह संज्ञा सूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि क्रिया के साथ प्र, परादि (प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप होते प्रादयः) उपसर्ग होते हैं तो आवश्यकतानुसार वे उपसर्ग, निपात और गति तीनों होते हैं।

36. भूवादयो धातवः - 1|3|1 यह संज्ञा सूत्र है, जिसका अर्थ है 'भू' आदि और 'वा' (वा गतिगन्धनयोः) जैसे धातु संज्ञक होते हैं,

Scanned with CamScanner

ये क्रिया के वाचक हैं।

37. उपसर्गादृति धातौ – 6।1।91.
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि अवर्णान्त (अ वर्ण से अन्त होनेवाले) उपसर्ग के परे ऋकारान्त धातु हो तो उनका पूर्व और पर वर्ण के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। यथा – प्रार्च्छति – प्र + ऋच्छति। यह 'आद् गुणः' का अपवाद है।

38. एङि पररूपम् – 6।1।94.
यह विधिसूत्र है। यदि अ और आ के परे 'एङ' (एओर्च, एओङ्) धातु हो तो पूर्व एवं पर के स्थान पर 'पररूप' एकादेश हो जाता है। यथा – प्र + एजते = प्रेजते।
उपोषति – उप + ओषति।

39. 'अचोऽन्त्यादि टि' – 1।1।64.
यह संज्ञा सूत्र है – स्वरों (अच्) के मध्य में अन्तिम अच् जिसके आदि में हो उसकी 'टि' संज्ञा होती है। (अर्थात् ओं होता है)

वा० – शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् – शकन्धु आदि शब्दों के पूर्वरूप एवं परवर्ण के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। और वह पररूप 'टि' का हो। यथा – शकन्धुः – शक + अन्धुः (शक देश का कुँआ), कर्क + अन्धुः – (कर्क राजाओं का कुँआ)
मनस् + ईषा = मनीषा।
मार्तण्डः – मृत + अण्डः।

40. ओमाङोश्च – 6।1।95
यह विधिसूत्र है। यदि अ, आ के परे 'ओम्' (अव्यय) अथवा 'आङ्' हो तो पूर्व एवं पर वर्ण के स्थान पर पररूप एकादेश हो जाता है। यथा – शिवायों नमः – शिवाय + ओं नमः।
शिव + आ + इहि।

Uma Pathak
Deptt. of Skt.
B.A. Ist Yr.

Scanned with CamScanner